मुसीबत सब पर आती है, इससे कोई तो बिखर जाता है और कोई निखर जाता है।
–अज्ञात।

विचार-प्रवाह

देहरादून, बृहस्पतिवार, 7 अप्रैल 2022

पेज थ्री

www.page3news.in

यूक्रेन पर रूस की सैन्य कार्रवाई!

रूस अभी इसे महज एक सैन्य कार्रवाई कह रहा है, लेकिन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसे यूक्रेन की सीमाओं का रूस द्वारा अतिक्रमण ही माना जा रहा है। देखने की बात यह होगी कि रूस की इस कार्रवाई पर अपनी प्रतिक्रिया में अमेरिका और अन्य नाटो देश किस हद तक जाते हैं।

आरती सिंह।।

यूक्रेन के दो प्रांतों को स्वतंत्र देशों के रूप में मान्यता देने के अगले ही दिन रूस ने वहां अपनी सेना भेज दी और इसके साथ ही दोनों देशों के बीच बाकायदा युद्ध शुरू हो गया है। हालांकि रूस अभी इसे महज एक सैन्य कार्रवाई कह रहा है, लेकिन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसे यूक्रेन की सीमाओं का रूस द्वारा अतिक्रमण ही माना जा रहा है। देखने की बात यह होगी कि रूस की इस कार्रवाई पर अपनी प्रतिक्रिया में अमेरिका और अन्य नाटो देश किस हद तक जाते हैं। इस बीच भारत की पहली चिंता यूक्रेन में फंसे 20 हजार से ज्यादा भारतीयों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की है, जिनमें से ज्यादातर स्टूडेंट्स हैं। पूरे यूक्रेन में आपात काल लागू कर दिया गया है। जगह–जगह हो रहे मिसाइल अटैक और बमबारी के कारण हालात चिंताजनक हैं। वहां फंसे नागरिकों को सुरक्षित वापस लाने के लिए भेजे गए एयर इंडिया के एक विमान को आधे रास्ते से ही वापस लौटाना पड़ा क्योंकि वहां उसकी सेफ लैंडिंग सुनिश्चित नहीं हो पा रही थी। वहां से विभिन्न स्टूडेंट्स के विडियो मैसेज भी आ रहे हैं जिनमें भारत सरकार से उन्हें वहां से निकालने की गुहार लगाई जा रही है।

इस बीच विदेश मंत्रालय और कीव स्थित भारतीय दूतावास की ओर से उन स्टूडेंट्स तक पहुंचने और उन्हें आश्वस्त करने की कोशिशें तेज हो गई हैं। न केवल हेल्पलाइन नंबर मुहैया कराए गए हैं बल्कि स्टूडेंट्स को वहां से निकालने के वैकल्पिक उपायों पर भी विचार किया जा रहा है। जहां तक इस युद्ध के अन्य दुष्प्रभावों की बात है तो उसका सिलसिला भी दुनिया भर के बाजारों में आई जबर्दस्त गिरावट के साथ ही शुरू हो चुका है। भारत में भी सेंसेक्स और निफ्टी में करीब 3.5 फीसदी की गिरावट देखी गई। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत 100 डॉलर प्रति बैरल को पार कर चुकी है जो पिछले सात वर्षों की रेकॉर्ड ऊंचाई है। ये ऐसे दुष्प्रभाव हैं, जो तत्काल घटित हो चुके हैं। इनका असर भी अलग–अलग रूपों में हमारे सामने आता रहेगा, लेकिन उससे बड़ा सवाल यह है कि स्थिति अभी और कितनी बिगड़ेगी और यह कि शांति स्थापित होने में कितना वक्त लगेगा।

बेशक, हालात काफी उलझे हुए हैं, लेकिन कई प्रेक्षक कह रहे हैं कि अगर रूस की सुरक्षा चिंताओं को समझते हुए यूक्रेन को नाटो में शामिल न करने और मिन्स्क समझौते का पालन कराने से जुड़ी उसकी दो मूल मांगों पर समय रहते ध्यान दिया जाता तो संभवतरू स्थिति इतनी न बिगड़ती। लेकिन, जब जागे, तभी सवेरा। अब भी अंतरराष्ट्रीय बिरादरी को चाहिए कि कुछ खास देशों या नेताओं को इसे अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाने की इजाजत न दे और सभी संबंधित पक्षों की जायज चिंताओं का सम्मान करते हुए जल्द से जल्द शांति स्थापित करने की कोई राह निकाले।

जैविक या सांस्कृतिक

अशोक वोहरा। क्या धर्म जैविक या सांस्कृतिक विकास का उत्पाद है? इस तरह के सवालों के जवाब के लिए, दृष्टिकोण को धर्मशास्त्र और दर्शन पर आधारित होना चाहिए। दार्शनिक ज्ञान विचारों, विश्वासों और विचारों के मानदंड का एक सेट है, जो उस युग से पहले का था जिसमें दर्शन को मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं की सच्चाइयों और व्याख्याओं की तलाश करने के मुख्य तरीके के रूप में विकसित किया गया था। दर्शन का अभ्यास तब किया जाता है जब मानव विचार आत्म–चेतन बन जाता है। उनके विषय जीवन, ब्रह्मांड और पूरे अस्तित्व के बारे में जटिल सवालों को कवर करते हैं। सोचने का यह तरीका हमें ऐसे प्रश्नों पर विचार करने के लिए भी आमंत्रित करता है जैसेरू क्या वास्तविक और स्पष्ट के बीच अंतर है? ब्रह्मांड की उत्पत्ति क्या है? क्या यह अन्य प्रकार के प्रश्नों के बीच?

संपादकीय

मध्यस्थता की नीति

भारत अन्य विकासशील देशों को साथ लेकर ऊर्जा सुरक्षा के लिए मध्यस्थता की नीति अपना सकता है। इस झगड़े में भारत किसी खेमे में नहीं है। समान हितों वाले देशों के साथ वह ऊर्जा संकट से बचने के लिए कीमतों में छूट और तेल व गैस के सुगम परिवहन की मांग कर सकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वैश्विक साख इसमें मददगार होगी। खास बात यह कि इस युद्ध का समाधान भी ऊर्जा संसाधनों की हर देश के लिए अनिवार्यता में ही छिपा है। चीन और रूस के मौजूदा गठबंधन के पीछे भी ऊर्जा अहम किरदार है। रूस के कुल तेल निर्यात में चीन 15.4 प्रतिशत हिस्सा रखता है। वहीं रूस के कुल प्राकृतिक गैस निर्यात में पिछले साल चीन ने 6.7 प्रतिशत की हिस्सेदारी रखी। तेल के इस खेल में अमेरिका के मोहरे भी दांव पर हैं। महंगे ईंधन की चोट पहले से महंगाई से जूझ रहे अमेरिका को भी परेशान करेगी। इस साल अमेरिकी सीनेट का चुनाव है। 2021 में अमेरिका ने रूस से अपनी जरूरत का 3 प्रतिशत कच्चा तेल आयात किया। अमेरिका रूस से आयातित भारी कच्चे तेल को गैसोलीन, डीजल और विमान ईंधन में बदलता है। जाहिर है, अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडेन भी ऐसे निर्णायक समय में महंगे ईंधन की तपिश नहीं झेलना चाहेंगे।

रूस के साथ भारत के रक्षा से लेकर ऊर्जा परियोजनाओं में बड़े समझौते हैं। भारत 85 प्रतिशत तेल और 65 फीसदी प्राकृतिक गैस आयात करता है। यूरेनियम और बिजली संयंत्र के कलपुर्जे रूस से ही आते हैं।

ऊर्जा परियोजनाओं को भी निशाना

अरविन्द कुमार मिश्रा।।

रूस–यूक्रेन के बीच चल रहा युद्ध भले ही हथियारों से लड़ा जा रहा है, लेकिन इसके केंद्र में ऊर्जा संसाधन व परियोजनाएं हैं। ऊर्जा के वे संसाधन जो हमारे जीवन को गुणवत्ता देते हैं, युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार करने से लेकर शह–मात के लिए इस्तेमाल में लाए जा रहे हैं। यह तब हो रहा है जब दुनिया जलवायु न्याय के साथ ऊर्जा सुरक्षा के ठोस उपाय खोज रही है।

अमेरिका के बाद रूस विश्व का दूसरा सबसे बड़ा तेल उत्पादक देश है। रूस और सऊदी अरब दोनों बारह–बारह प्रतिशत कच्चे तेल का उत्पादन करते हैं तो अमेरिका 16 फीसदी। रूस की आमदनी का 43 प्रतिशत हिस्सा ऊर्जा संसाधनों के निर्यात से आता है। वैश्विक तेल आपूर्ति में रूस की हिस्सेदारी दस फीसदी है। यूरोप में तो रूस ने हजारों किलोमीटर तक गैस पाइपलाइन बिछाई है। ये बेलारूस, पोलैंड, जर्मनी समेत अनेक देशों से गुजरती है। युद्ध के चलते कच्चा तेल अब 140 डॉलर प्रति बैरल पार करने को है। यह दाम पिछले 14 साल में सबसे ज्यादा है।

युद्ध में दोनों खेमे ऊर्जा परियोजनाओं को भी निशाना बना रहे हैं। गैस व तेल की आधे से अधिक की जरूरत के लिए रूस पर निर्भर जर्मनी ने नॉर्ड स्ट्रीम–2 गैस पाइपलाइन का संचालन रोक दिया है। इससे यूरोप के कई देशों की बत्ती गुल हो सकती है। रूस के सेंट्रल बैंक पर प्रतिबंध से रूसी मुद्रा रूबल रिकॉर्ड निचले स्तर पर है। रूस की प्रमुख पेट्रोलियम कंपनी शेल ने वहीं की गैस कंपनी गैजप्रोम के साथ सभी साझा उपक्रम बंद कर दिए हैं। वहीं ब्रिटिश पेट्रोलियम (बीपी) ने रूस की सरकारी तेल कंपनी रोसनेफ्ट में अपनी हिस्सेदारी बेचने का एलान कर दिया है। साफ है कि संबंधित देश इस नुकसान की भरपाई तेल और गैस की कीमतों को बढ़ाकर करेंगे। भारत में भी तेल के दाम कम से कम छह रुपये प्रति लीटर बढ़ने जा रहे हैं।

रूस के साथ भारत के रक्षा से लेकर ऊर्जा परियोजनाओं में बड़े समझौते हैं। भारत 85 प्रतिशत तेल और 65 फीसदी प्राकृतिक गैस आयात करता है। यूरेनियम और बिजली संयंत्र के कलपुर्जे रूस से ही आते हैं। हालांकि भारत अपनी जरूरत का कच्चा तेल और प्राकृतिक गैस का बड़ा हिस्सा मध्य पूर्व, अफ्रीका और उत्तरी अमेरिका से पूरा करता है। लेकिन ऊर्जा के वैश्विक आपूर्ति तंत्र में रुकावट होने से बोझ तो हर देश पर पड़ेगा। ऐसे में बेहतर होगा कि भारत अपना कच्चे तेल का रणनीतिक भंडार बढ़ाए। अमेरिका, मध्य पूर्व और अफ्रीका के देशों से तेल कैसे अधिक लाया जाए, इसके रास्ते निकालने होंगे। साथ ही भारत और रूस ने एक दूसरे के यहां जो निवेश किया है, उन्हें सुरक्षित करने के लिए द्विपक्षीय करार को नए सिरे से परिभाषित किया जाए। संयुक्त राष्ट्र संघ जब तक रूस पर प्रतिबंध नहीं लगाता है तब तक भारत उन प्रतिबंधों को मानने के लिए बाध्य नहीं है।

सूडोकू नवताल- 5295

★★★★☆ मध्यम

8	2			6			1	
	6		8	9			7	5
3			1					2
	3		4				6	
6		2		1		4		3
	8				5		2	
2					3			1
5	1			7	6		4	
	9			4			3	6

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं।
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।
- पहेली का केवल एक ही हल है।

सूडोकू नवताल -5294 का हल

8	6	4	2	7	9	5	3	1
7	3	9	1	8	5	2	6	4
1	5	2	4	3	6	7	9	8
4	1	3	8	6	7	9	5	2
5	8	6	9	2	4	3	1	7
2	9	7	5	1	3	8	4	6
9	4	8	7	5	1	6	2	3
3	7	5	6	4	2	1	8	9
6	2	1	3	9	8	4	7	5

अपना ब्लॉग

कट्टर इस्लाम की फिक्र में दुबला होता गिरोह

मोहन। आप कहेंगे कि आखिर हिंदुओं में ऐसी जागृति कैसे आ गयी? इसका सबसे बड़ा कारण इंटरनेट के कारण सूचना की सुलभता है। इस दिशा में सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म्स क्रांतिकारी भूमिका निभा रहे हैं। कल तक जो पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्ता, ऐक्टर आदि उदारवाद के मशाल वाहक जान पड़ते थे, इस सूचना युग में उनकी हरकतों से पर्दा उठने लगा तो पता चला कि हमाम में सब नंगे हैं। बल्कि ये उदारवादी तो असल में सबसे बड़े कट्टर हैं और प्रगतिशीलता की राह के सबसे बड़ा रोड़ा तो यही हैं। हिंदुओं को लगने लगा कि ये हमें इसलिए उदार बनाना चाहते हैं ताकि कट्टर इस्लाम के रास्ते में कोई रोड़ा नहीं अटके। उन्होंने गौर किया तो लगातार स्पष्ट होने लगा कि दरअसल उदारवादियों को मुसलमानों की नहीं बल्कि कट्टर मुसलमानों की फिक्र है। तथाकथित उदारवादी और सेक्युलर जमात हमेशा मुसलमानों में उदारवाद की जगह कट्टरता को तरजीह देता है। वो हर वक्त मुसलमानों में कट्टरता को उभारने की जीतोड़ कोशिशें करता है जबकि बाकी समुदायों को उदार बनाने की।